

中国传统文化别裁 郭预衡 冀 勤 主编

# 幽 默 别 裁

王振华 评释

学苑出版社

## 总 序

我有时想,人,应该懂得传统,作为文化人,更要懂得文化传统。但中国的文化传统如此深广,如何能懂?单就历史而言,古人早已说过:“十七史从何读起!”今天又有二十四史,二十五史,简直无从读起了。连史书都无从读起,何况其余?

大概正是因此之故,图书市场上便出现了很多“大观”、“大全”之类,将“大千世界”捏成“微缩景观”。但鲁迅早就说过:“一本书怎么会‘大观’呢?”(《致杨霁云》之六)即使是一套系列丛书,作到“大观”,也非容易。任何系列,也只能概括一个方面。

这部《中国传统文化别裁》,也是概括一个方面的,不同于某些“大观”、“大全”,不是“微缩景观”。

作为《中国传统文化别裁》,着重在显示文化传统的某些特点。中国的文化传统,无论是文学艺术,工艺美术,或历史掌故,都是有自己的特点的。单就文章而言,汉语文章的骈词、偶句、骈体、散体,其音调之铿锵,形象之绚丽,都是极有特色的。所以刘师培讲到汉语文章这一传统特点的时候,至谓“禹域所独然,殊方所未有”(《中国中古文学史》)。

再就写字而言,在很多国度,写字不能成为艺术;而在中国,写字却成为书法,而且颇能体现中国民族文化的传统特征。其在某一书家自己,也最体

现其人的个性。

还有绘画,所谓“传神写影,都在阿堵中”,也是一种艺术传统。至于画竹之有“成竹”,画马之有“全马”,画山水之“得其性情”,如此等等,无不体现着中国的艺术传统。

至于饮食,自然也有文化传统。但从历史上看,不同的阶层,传统似又不同。“朱门酒肉臭,路有冻死骨”,富人和穷人,传统很不一样。富人“食前方丈”,穷人“不厌糟糠”。本书既选有“随园食单”之序,又选有板桥寄弟之书。袁枚“家厨”能够“颇集众美”,其食之美可想而知。板桥“咽碎米饼,煮糊涂粥,双手捧碗缩颈而啜之”。其食之味,亦可想而知。

由饮食一事,似亦可知,文化传统,并非一律。伊里奇前辈曾讲两种文化。鲁迅说到“中国固有的精神文明”的时候,也曾列举“各式各样的筵宴,有烧烤,有翅席,有便饭,有西餐。但茅檐下也有淡饭,路旁也有残羹,野上也有饿莩……”(《灯下漫笔》)。鲁迅在这里讲的是“精神文明”,没讲“传统文化”。但我想,如果鲁迅活到今天,请他谈谈“饮食文化”,真不知道他该说啥。

说到饮食,颇有兴致。话说多了,离题也就远了。作为序言,到此为止吧。

郭预衡

1997年4月20日于北京

## 前 言

幽默是人生的智慧。

如果说天以闪电为笑,那只能算作想象的杰作。笑毕竟是人类特具的本领。而引人发笑的原因却有多种,日常生活中某件小事的有趣发谑都可能引来我们畅怀的大笑,但真正的笑倒是别有会心的欣然独笑,是那种跨越时间空间的相视心通,是那种最意味深长的幽默的笑。

幽默在惯常看来只是某种小契机所带来的诸趣,属于小玩意儿吧。说某某人幽默,大抵也只指他的风趣,但人生如此沉重,现代史上便有人提倡幽默的人生态度,这样,幽默就推广到了整个人生。我们说,幽默的人生态度是建立在智慧基础上的理解和宽容,它不应该仅仅是雕虫小技式的玩笑,它同时也是一种深刻的哲学,其功用便是“替沉闷的人生透一口气。”(钱钟书)

幽默是舶来品。当年林语堂为翻译这个名词曾煞费心思,终于得到完满的译名。比较起来,中国文化传统中似乎没有严格意义上的幽默,多的是讽谏、寓言、优语、滑稽故事和笑话之类。讽谏有很明确的目的,优语的情况较复杂,有讽谏意味,也有取悦于人的意思,寓言的形式和幽默有不小的差别,而滑稽

故事和笑话又可能流于浅薄。这种种类型在某个层面上和幽默有相似之处,但从深层来说,却缺少那种莫逆于心、相视而笑的意蕴。

然而,我们也许太囿于既定模式了。如果说幽默是人生的智慧,那么谁能说《史记》中《滑稽列传》的故事,庄子的寓言、历代优人的讽谏、名士的清谈直至市井小民的戏语中不贯穿智慧的精神呢?中国传统中的这种种类型也许缺乏那种会心、那份宽厚的理解,但在体现人生的智慧这一点上,却和西方的幽默精神是相通的。

现在摆在读者面前的这本《幽默别裁》,其选择的标准也就是那些意蕴浑圆,最能从中品味人生的故事。幽默和人生是分不开的。在这些故事里,最能体味到人生的各个侧面。那种中国式的智慧常让人忍俊不禁。也有相当一部分故事是时代社会的写照。其幽默已从宽厚的理解跃入尖刻的讽刺。中国社会的现实决定了文以载道的传统,记录风俗人情,表达思想见解最终使中国式的幽默和西方幽默明显地区别开来。

让我们通过这本小书,去领略中国式的人生智慧之光吧。

# 目 录

## 素处以默，妙机其微

### ——启智篇

|               |       |
|---------------|-------|
| 凤凰献楚王 .....   | ( 1 ) |
| 拙于用大 .....    | ( 2 ) |
| 东施效颦 .....    | ( 5 ) |
| 晏子使楚 .....    | ( 6 ) |
| 逾淮为枳 .....    | ( 8 ) |
| 不死之药 .....    | ( 9 ) |
| 以五十步笑百步 ..... | (10)  |
| 杞人忧天 .....    | (12)  |
| 日远近 .....     | (14)  |
| 访戴 .....      | (15)  |
| 刘伶病酒 .....    | (17)  |
| 阮籍居丧 .....    | (18)  |
| 闻见问答 .....    | (20)  |
| 二小儿辩日 .....   | (21)  |
| 简雍 .....      | (23)  |
| 师徒斗智 .....    | (24)  |
| 文字游戏 .....    | (26)  |
| 未解思量 .....    | (27)  |

|                 |      |
|-----------------|------|
| 赤眼作白眼诨 .....    | (28) |
| 藏拙 .....        | (30) |
| 东坡试笔 .....      | (31) |
| 走独木桥 .....      | (33) |
| 妙问 .....        | (35) |
| 看手脚 .....       | (36) |
| 算旧帐 .....       | (38) |
| 鬼欺好人 .....      | (39) |
| 土少不能和 .....     | (41) |
| 长生术 .....       | (43) |
| 幡然一翁 公然一婆 ..... | (44) |
| 围城 .....        | (45) |
| 不打是打 .....      | (47) |
| 刘伶醉酒 .....      | (49) |
| 水出高原 .....      | (50) |
| 我也不认识 .....     | (52) |
| 假人 .....        | (53) |
| 不笑所以深笑 .....    | (55) |
| 盲苦 .....        | (56) |
| 彭祖脸太长 .....     | (57) |
| 死后佳 .....       | (59) |
| 知无涯 .....       | (60) |
| 今昔不同时 .....     | (62) |
| 贼智过人 .....      | (63) |
| 钱眼里坐 .....      | (65) |
| 秀才买柴 .....      | (66) |

|             |      |
|-------------|------|
| 贫士 .....    | (68) |
| 代受打 .....   | (70) |
| 疑是又疑非 ..... | (71) |
| 商季子悟道 ..... | (72) |
| 不得死 .....   | (74) |
| 骑虎 .....    | (76) |

## 振危释急，意归义正

### ——讽谕篇

|                |       |
|----------------|-------|
| 郢书燕说 .....     | (78)  |
| 贱人贵马 .....     | (79)  |
| 持廉至死 .....     | (82)  |
| 虽短休居 .....     | (85)  |
| 漆城荡荡 .....     | (87)  |
| 尚何还顾 .....     | (88)  |
| 桀纣并世 .....     | (90)  |
| 和地皮掠来 .....    | (92)  |
| 我已经倾家荡产了 ..... | (93)  |
| 怕妇大好 .....     | (94)  |
| 泰山之力 .....     | (96)  |
| 买鸡子竹笋 .....    | (97)  |
| 雨惧税 .....      | (99)  |
| 掉书袋 .....      | (100) |
| 春秋笔法 .....     | (102) |
| 全不救护丈人 .....   | (104) |
| 远水不救近火 .....   | (106) |

|              |       |
|--------------|-------|
| 差不多蠢·····    | (108) |
| 你大哥太不像话····· | (110) |
| 和你都输去·····   | (111) |
| 保命官·····     | (113) |
| 遇偷·····      | (114) |
| 阔朋友·····     | (115) |
| 做一回孝子·····   | (116) |
| 悦谏·····      | (118) |
| 梦中得金·····    | (119) |
| 只管外科·····    | (122) |
| 蝙蝠·····      | (123) |
| 作祭文·····     | (125) |
| 道学相骂·····    | (126) |
| 许日子·····     | (127) |
| 不留客·····     | (128) |
| 学游水·····     | (129) |
| 穿山甲·····     | (130) |
| 厨子·····      | (131) |
| 木匠·····      | (132) |
| 讨便宜·····     | (133) |
| 及第·····      | (135) |
| 合做酒·····     | (136) |
| 盐豆·····      | (137) |
| 官府生日·····    | (138) |
| 长面·····      | (139) |
| 贪吏起誓·····    | (140) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 须寻生计·····   | (141) |
| 新官赴任问例····· | (143) |
| 不语禅·····    | (144) |
| 衣食父母·····   | (146) |
| 人参汤·····    | (147) |
| 割股·····     | (148) |
| 医驼背·····    | (150) |
| 有天没日·····   | (151) |
| 饮风扃烟·····   | (153) |
| 职业病·····    | (155) |
| 五大天地·····   | (156) |
| 陈万年教子·····  | (157) |
| 轿夫之言·····   | (158) |

## 人情不一,纤词弄巧

### ——谐谑篇

|           |       |
|-----------|-------|
| 狗猛酒酸····· | (161) |
| 性急的人····· | (162) |
| 自讨没趣····· | (163) |
| 竹竿进城····· | (164) |
| 隐身术·····  | (165) |
| 独步来·····  | (167) |
| 妒妇津·····  | (169) |
| 怕酱·····   | (171) |
| 铃声有别····· | (174) |
| 刘道真·····  | (175) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 裴生展才 .....  | (177) |
| 怨诗掺假 .....  | (179) |
| 痴婿吊丧 .....  | (180) |
| 动箎论难 .....  | (181) |
| 山东佐史 .....  | (183) |
| 田媪 .....    | (184) |
| 殷安 .....    | (186) |
| 边仁表 .....   | (188) |
| 短人行 .....   | (189) |
| 作鸡鸣 .....   | (191) |
| 岂是车拨伤 ..... | (192) |
| 因何尤箭 .....  | (194) |
| 六斤半 .....   | (195) |
| 县官学狗叫 ..... | (196) |
| 假作僧道 .....  | (198) |
| 兵不血刃 .....  | (200) |
| 听诗 .....    | (201) |
| 七分读 .....   | (203) |
| 颂虱 .....    | (204) |
| 裔婿 .....    | (205) |
| 好占便宜 .....  | (206) |
| 换饭吃 .....   | (207) |
| 火烧裳尾 .....  | (209) |
| 欧阳公释名 ..... | (210) |
| 兄弟相拗 .....  | (211) |
| 兄弟虚妄 .....  | (213) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 客答 .....  | (215) |
| 讳名 .....  | (217) |
| 畏馒头 ..... | (218) |
| 门客 .....  | (220) |
| 认真 .....  | (222) |
| 慢性子 ..... | (224) |
| 学偷 .....  | (225) |
| 遇偷儿 ..... | (227) |
| 宋笈 .....  | (229) |
| 风水 .....  | (230) |
| 问令尊 ..... | (231) |
| 骆驼蹄 ..... | (232) |
| 看镜 .....  | (233) |
| 撒半价 ..... | (235) |

## 唯性所宅，真取弗羈

### ——俚俗篇

|              |       |
|--------------|-------|
| 人言不可信 .....  | (237) |
| 煮竹 .....     | (238) |
| 昏忘 .....     | (239) |
| 再做一个煎饼 ..... | (241) |
| 胜伊一倍 .....   | (243) |
| 殷羨 .....     | (244) |
| 见屈原 .....    | (246) |
| 讲论语 .....    | (247) |
| 唐三藏可活 .....  | (248) |

|               |       |
|---------------|-------|
| 吾从众 .....     | (249) |
| 月夜招僧闲话 .....  | (250) |
| 妒 .....       | (252) |
| 妒妇 .....      | (253) |
| 不知羞 .....     | (255) |
| 内逼光访 .....    | (257) |
| 性恍惚 .....     | (258) |
| 駮 .....       | (260) |
| 误语 .....      | (261) |
| 秃字 .....      | (262) |
| 恨卢郎 .....     | (263) |
| 抢婚 .....      | (265) |
| 孙非尔力 .....    | (266) |
| 嗜酒者 .....     | (267) |
| 掇马桶 .....     | (268) |
| 痴夫 .....      | (269) |
| 话淡 .....      | (270) |
| 学慳 .....      | (271) |
| 算命 .....      | (273) |
| 打差别 .....     | (275) |
| 双斧劈柴 .....    | (277) |
| 驴乞假 .....     | (278) |
| 盗牛 .....      | (280) |
| 老先生 .....     | (281) |
| 躲债 .....      | (283) |
| 鱼鳖不可胜食也 ..... | (285) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 遇鬼 .....    | (286) |
| 话不投机 .....  | (287) |
| 看相 .....    | (289) |
| 同席不相认 ..... | (291) |
| 误哭遭打 .....  | (292) |
| 哑子说话 .....  | (294) |
| 臭得更狠 .....  | (295) |
| 撒不来 .....   | (297) |
| 市中弹琴 .....  | (298) |
| 要猪头银子 ..... | (300) |
| 骂放屁 .....   | (302) |
| 干净刀 .....   | (303) |
| 痴人说梦 .....  | (305) |
| 藏年 .....    | (306) |
| 天上坐 .....   | (307) |
| 好睡 .....    | (309) |
| 性刚 .....    | (311) |
| 书低 .....    | (312) |
| 烧香 .....    | (313) |
| 取名 .....    | (314) |
| 好静 .....    | (315) |
| 看上了你 .....  | (317) |
| 再出恭 .....   | (318) |

素处以默，妙机其微

——启智篇

### 凤凰献楚王

楚人有担山鸡者，路人问曰：“此何鸟？”担者欺之曰：“凤皇也。”路人曰：“我闻有凤皇久矣，今真见之，汝卖之乎？”曰：“然。”乃酬千金。弗与，请加倍，乃与之。方将献楚王，经宿而鸟死。路上不遑惜其金，惟怅不得以献耳。国人传之，咸以为真凤而贵，宜欲献之，遂闻于楚王。王感其欲献已也，召而厚赐之，过买凤之值十倍矣。

#### 译文

楚国有个人挑着山鸡，路上有人问道：“这是什么鸟啊？”挑担子的人骗他说：“是凤凰。”过路人说：“我听说有凤凰已经很久了，今天才真的见到凤凰，你肯出卖它吗？”挑担人就答应了。过路人出价千金，挑担人不肯卖，过路人又加了一倍价钱，挑担人才卖给了他。没想到正准备将这只凤凰献给楚王

时,才过了一宿凤凰就死了。过路人并不可惜那些钱财,只遗憾这下子没法子献给楚王了。整个楚国传来传去,都觉得那是真凤凰,是很珍贵的东西,还是该献给楚王。于是,楚王知道了这件事情,他很感动臣民们献给他凤凰的好意,就召见那个过路人,赏他许多钱财,比过路人当初买凤凰的价钱要超过十倍了。

### 点评

本篇选自《笑林》。这个故事挺有意味,其核心几乎就是一个“骗”字。担山鸡者骗人说:这是凤凰。买山鸡欲献给楚王的人也无非是骗取楚王的欢心。而最终楚王的召见和厚赏也是骗取天下人的忠诚。因为所谓凤凰原来只是山鸡而已。你骗我,我骗你,最大的骗子却是楚王,骗天下所有的人。

凤凰献楚王还有继起者,那就是赵高的指鹿为马。同样是骗,但其目的已大不相同,赵高是欺骗二世,考验群臣,故意颠倒黑白。两个故事给我们共同的启示,便是政治与骗术的关联。真假莫辨,就容易上当受骗。

## 拙于用大

惠子谓庄子曰:“魏王贻我大瓠(hù,户)之种,我树之成,而实五石。以盛水

浆，其坚不能自举也；剖之以为瓢，则瓠落无所容。非不呺(xiào 笑)然大也，吾为其无用而剖之。”

庄子曰：“夫子固拙于用大矣。宋人有善于用不龟手之药者，世世以泝(píng 平)澼(pì 辟)絖(kuàng 况)为事。客闻之，请买其方百金。聚族而谋曰：‘我世世为泝澼絖，不过数金；今一朝而鬻技百金，请与之。’客得之，以说吴王。越有难，吴王使之将。冬，与越人水战，大败越人，裂地而封之。能不龟手一也，或以封，或不免于泝澼絖，则所用之异也。今子有五石之瓠，何不虑以为大樽，而浮乎江湖，而忧其瓠落无所容，则夫子犹有蓬之心也夫！”

### 译文

惠子对庄子说：“梁惠王送给我葫芦种子，我种下种子，竟成活了，结了一个能装五石的大葫芦。用这葫芦来装饮料，葫芦脆弱得禁不住举起来。把葫芦剖开来做瓢，又不能装什么东西。并不是因为它虚大的样子，而是因为它没什么用处才把它剖开来啊。”

庄子说：“你老先生实在是不会利用大的东西。